अंक 291 वर्ष 59

भाषा

जुलाई–अगस्त 2020

भारतीय एवं विश्व सिनेमा विशेषांक

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

भाषा

जुलाई–अगस्त 2020

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित पत्रिका (क्रमांक–16)

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रोफेसर रमेश कुमार पांडेय

परामर्श मंडल
प्रो. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'
डॉ. पी. ए. राधाकृष्णन
प्रो. ऋषभ देव शर्मा
प्रो. मंजुला राणा
प्रो. दिलीप कुमार मेधी
श्रीमती पद्मा सचदेव
श्री हितेश शंकर

संपादक
डॉ. राकेश कुमार

सह–संपादक
डॉ. किरण झा
श्रीमती सौरभ चौहान

प्रूफ रीडर
श्रीमती इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

439 CHD/20—1A

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से

संपादकीय

आलेख

1. सिनेमा : समाज, साहित्य और संवदेना की सशक्त अभिव्यक्ति	डॉ. पूरनचंद टंडन	9
2. भारतीय सिनेमा का प्रारंभिक दौर : एक दृश्य चलचित्र क्रांति	हरिराम	14
3. सिनेमा – भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति का संवाहक	डॉ. एम. रामचंद्रम	17
4. कला, हिंदी सिनेमा और भारतीय समाज : एक वैचारिक पहलू	प्रवीण कुमार	20
5. इक्कीसवीं सदी का हिंदी सिनेमा : बदलते दौर का सच	मनोज पांडेय	27
6. हिंदी साहित्य और सिनेमा में समाज-हित और राष्ट्रीयता का भाव	डॉ. अमित सिंह	33
7. साहित्य, सिनेमा और समाज का अंतर्संबंध	कुंतला दत्त	39
8. सिनेमा और समाज	डॉ. अर्चना झा	44
9. हिंदी सिनेमा और सामाजिक सरोकार	डॉ. अलका आनंद	49
10. गुलजार के गीतों में जिंदगी के रंग	डॉ. करन सिंह ऊटवाल	53
11. शैलेंद्र के गीतों का साहित्यिक महत्व	डॉ. प्रियंका	58
12. सिनेमा – अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम	डॉ. दीपक दीक्षित	64
13. साहित्य, सिनेमा और भूमंडलीकरण	डॉ. विपुल कुमार	68
14. सिनेमा : आज और कल	डॉ. श्रवण कुमार	74
15. बाल मन पर आधारित हिंदी सिनेमा	डॉ. विनीता कुमारी	82
16. भारतीय सिनेमा की प्रारंभिक फिल्में व मुंशी प्रेमचंद के साहित्याधारित फिल्मों के परिदृश्य में जातिगत समन्वय	हेतराम	87
17. हिंदी फिल्मों में जातिप्रथा के विभिन्न आयामों का चित्रण	उमेश कुमार	91
18. हिंदी सिनेमा एवं जनजातीय संस्कृति : विशेष संदर्भ पूर्वोत्तर भारत	डॉ. मिलन रानी जमातिया	97
19. बदल रहा है हिंदी सिनेमा	डॉ. सुनील कुमार तिवारी	101
20. हिंदी सिनेमा का बदलता ट्रेंड	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	105

अनु२१०८

21. भारत में फिल्म निर्माण शिक्षा एवं व्यवसाय के विविध पहलू	डॉ. गोरखनाथ तिवारी	113
22. सिनेमा - समकालीन परिदृष्य (सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक) थर्ड जेंडर (किन्नर विमर्श) के संदर्भ में	डॉ. अनुपमा	117
23. असमिया सिनेमा का इतिहास : एक अवलोकन	डॉ. रीतामणि वैश्य	121
24. असमिया सिनेमा को भूपेन हजारिका की देन	पूजा बरुवा	127
25. पारसी रंगमंच और हिंदी सिनेमा का आगाज	डॉ. कंचन वर्मा	130
26. मलयालम सिनेमा की विकास यात्रा	डॉ. धन्या. एल	136
27. भोजपुरी सिनेमा का समाजशास्त्र	प्रो. आलोक पांडेय	140
28. कॉकबरक सिनेमा का उद्‌भव और विकास	डॉ. बीना देबबर्मा	143
29. वैश्विक पटल पर पहचान बनाता असमिया सिनेमा	डॉ. अनुशब्द	147
30. गुजराती सिनेमा - एक मूल्यांकन	डॉ. वर्षा सोलंकी	152
31. हिंदी सिनेमा और शेक्सपीयर का साहित्य	डॉ. अनुराधा पांडेय	154
स्मृतियाँ		
32. एक महान कलाकार ही नहीं, एक महान इंसान भी थे- इरफान....	अजय मलिक	159
33. हिंदी सिनेमा में प्रेमग्रंथ का रचयिता-ऋषि कपूर	विनोद अनुपम	162
34. सुशांत सिंह राजपूत - एक चमकता सितारा	नीति सुधा	165
संपर्क सूत्र		168
सदस्यता फार्म		

भाषा ISSN 0523-1418

वैश्विक पटल पर पहचान बनाता असमिया सिनेमा

डॉ. अनुशब्द

सिनेमा एक सामुदायिक संचार माध्यम है। यह लोकसंचार की सबसे लोकप्रिय एवं सशक्त विधाओं में से एक है लोकमंगल एवं लोकरंजन के उद्देश्य से निर्मित इस विधा में साहित्य, संगीत एवं कला की त्रिवेणी समाई हुई है। भारत में सिनेमा का इतिहास वर्षों पुराना है। हिंदी सिनेमा के तो अभी हाल ही में सौ वर्ष पूरे हुए हैं। गौरतलब है कि भारत में क्षेत्रीय भाषाओं में निर्मित फिल्मों की भी अपनी एक समृद्ध एवं सुदीर्घ परंपरा रही है। यह दीगर बात है कि इन फिल्मों का दर्शक-वर्ग काफी सीमित है, बाजार छोटा है लेकिन विषय-वस्तु, प्रस्तुति एवं प्रभाव की दृष्टि से ये फिल्में किसी भी मायने में मुख्य धारा की फिल्मों से कमतर नहीं हैं। यह बात पूर्वोतर भारत की एकमात्र आधुनिक भारतीय आर्यभाषा असमिया में बनने वाली फिल्मों के संदर्भ में भी सोलह आने सही है। 1935 में आरंभ हुआ असमिया सिनेमा तब से अब तक कई सारे अहम् मुकामों को प्राप्त कर चुका है। कई सारी असमिया फिल्में सफलता के शिखर को छू चुकी हैं तथा भारतीय सिनेमा ही नहीं बल्कि विश्व सिनेमा के समक्ष नए कीर्तिमान और प्रतिमान स्थापित कर चुकी हैं हालांकि हिंदी फिल्मों के मुकाबले क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों को लोग कम ही नोटिस करते हैं।

ध्यातव्य है कि वर्ष 2018 में जब एक असमिया फिल्म 'विलेज रॉकस्टार' ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जित किया और फिर ऑस्कर के लिए नामांकित हुई तब अचानक से असमिया सिनेमा सुर्खियों में आ गया। इसके पहले तक तमिल, तेलुगु, कन्नड आदि फिल्मों की हिंदी में डबिंग होती रही है और देश के सभी हिस्सों में उनकी खासी लोकप्रियता भी रही है लेकिन राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फलक पर असमिया सिनेमा द्वारा ऐसी उपलब्धि हासिल करना कई लोगों के लिए आश्चर्य की बात थी। इसकी एक प्रमुख वजह यह है कि देश का अधिकांश हिस्सा पूर्वोत्तर में बनने वाली फिल्मों से अनजान रहा है।

असमिया सिनेमा जिसे 'जॉलीवुड' के नाम से भी जाना जाता है, एक समृद्ध विरासत को स्वयं में समेटे हुए है। इसका इतिहास तो गौरवपूर्ण रहा ही है, वर्तमान उज्ज्वल और भविष्य संभावनाओं से भरा हुआ है। असम में सिनेमा की शुरुआत का एक बेहद दिलचस्प किस्सा प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक और आलोचक 'अब्दुल मज़ीद' सुनाते हैं-

"असम में सिनेमा का इतिहास बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से आरंभ हुआ जब गुवाहाटी के निवासियों को एक दक्षिण भारतीय व्यक्ति मेनन द्वारा लाई गई मूक फिल्म को देखने का सुअवसर मिला। गाँव से शहर में व्यापार के सिलसिले में या फिर कचहरी के काम से आने वाले लोग, मेनन की फिल्मों के दर्शक थे सिनेमा के इतिहास में इस पन्ने को जोड़ने वाले सिनेमा हॉल का नाम 'कामरूप सिनेमा' था। इस हॉल में मुख्यत: 'एम सी सेनेट' और 'चैपलीन' की फिल्में दिखाई जाती थीं। समय के साथ बोलती फिल्मों का चलन बढ़ा और कामरूप सिनेमा की चमक फीकी